"Sat Awtar ka Barnan" # SCP 6219
us. of Hist. of Incarnation
by A. Brodhead
Class of '58

१ कापी ३००० पुस्तकें। दाम ३ पाई॥

सत्य अवतार का वर्णन।

इलाहाबाद मिशन प्रेस में छपी सन १८७५ ई० ॥

कृष्टियन वर्नेक्यूलर इडुकेशन सुसैटी की ओर से

सत्य अवतार का वर्णन।

अवतार का अवश्य होना।

जितने लोग बुद्धिमान हैं वे मान लेते हैं कि सकल मनुष्य पाप के गड़हे में गिर पड़े हैं। इस के अनुसार ब्राह्मण भी प्रतिदिन कहा करते हैं कि

पापोहंपापकर्म्माहंपापात्मापापसंभवः

अर्थात मैं पापी हूं मैं पाप किया करता हूं मेरी आत्मा

पृ० पापसहित है मैं पाप करता चला आया हूं। यह सत्य बात है और सभों को ऐसा मान लेना अवश्य है॥ २

यदि कोई मनुष्य गड़हे में गिर पड़े तो अपने को बचा नहीं सक्ता। और जो बचानेहारा प्रगट न हो जो ऊपर से उसे खैंच निकाले तो वह नाश होगा। इस देश के बहुधा लोग समझते हैं कि जब ईश्वर ने लोगों का उद्धार करने चाहा तब अवतार लेके प्रगट हुआ। कौन इस देश का बासी है जिस ने विष्णु के दश अवतार कच्छ मच्छ बाराह इत्यादि का वर्णन नहीं सुना। जैसा हरिण पानी से क्लेशित हो बन में हांफता फिरता है और मृगतृष्णा देखकर धोखा

खाता है वैसा ही बहुधा मनुष्य मुक्ति के मार्ग का खोज करके ऐसों को परमेश्वर का अवतार जानते हैं जो सचमुच अवतार नहीं। और धोखा खाके और भूलसागर में डूब जाके वे शान्ति और बिश्राम नहीं परन्तु इस के विरुद्ध दुबधा और क्लेश प्राप्त करते हैं। जो अवतार पुराण में वर्णन होते हैं इस पुस्तक में उन सभों की परीक्षा नहीं कर सक्ते परन्तु जो मनुष्य बुद्धिमान है उस्से यह प्रश्न है क्या सम्भव है कि जैसा कृष्ण का वर्णन हुआ वैसाही सर्वशक्तिमान महा पवित्र ईश्वर अवतार ले गोपियों के संग सुख विलास और लीला क्रीड़ा करेगा। जो कोई कहे कि सामर्थी को दोष

नहीं लगता तो यह शास्त्र के विरुद्ध है। क्योंकि भगवद्गीता में कृष्ण अर्जुन से कहते हैं

श्लोक।

यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः। सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते॥

अर्थात मनुष्यजाति भेड़ियेधसान होकर प्रधानों के पीछे हो लेते हैं और उन के समान किया करते हैं जैसा गुरु वैसा चेला। और जो ईश्वर पाप करके मनुष्यों को पाप के वश में फंसाये तो क्योंकर वह उन का दण्डदाता होगा। सत्य बात तो यह है कि जितने अवतार हिन्दू शास्त्रों में वर्णन होते हैं वे सबके सब कवितों की बनावट हैं और मानने के योग्य नहीं

दोहा ।

देवतन कीन छिनाला मनइन कीन पुराण ॥

यद्यपि मृगतृष्णा हरिण को धोखा दे तथापि कहीं पानी सचमुच है जहां वह अपनी प्यास बुझावे और इसी रीति से यद्यपि मनुष्य झूठे अवतारों से धोखा खाते हैं तथापि सत्य अवतार है जो उन के सारे प्रयोजन को पूरा करने के योग्य है। परन्तु जान्ना चाहिये कि जो आपही पापसहित और धर्म्मरहित है वह पापियों को बचा नहीं सक्ता और इस कारण सत्य अवतार को निष्कलङ्क और महापवित्र होना अवश्य है। और यह बात ग्रहण करने के योग्य है कि जो यिसू नाम सत्य

अवतार होके परमेश्वर के बचन में हम पर प्रगट होता है अकेला वही निष्कलङ्क और पापियों के बचाने के योग्य है

श्लोक ।

कुमारिकन्यासुतमेकजातंमहाबलंतस्यपवित्ररूपम् ।
पुनश्चधर्म्मं नरहेतुकर्ताजगज्जनानांमरणंस्वयंयः ॥

अर्थात कुमारी कन्या पुत्र जनी वह बलवन्त था उस का पवित्र रूप था वह जग का सृजनहार होकर सकल मनुष्यों के लिये मरा

सत्य अवतार का वर्णन इस पुस्तक में होगा इस वर्णन को ध्यान से और यह प्रार्थना करके पढ़ना चाहिये

हे मेरे पिता सर्वज्ञानी महाकृपालु महादयालु परमेश्वर अपनी ओर से अपनी प्रकाशमान ज्योति मेरे अन्धकार मन में प्रवेश करके मुझे अपनी सचाई में चला मुझे सत्य अवतार यिसू का माहात्म्य के देखने के योग्य कर और कृपा कर कि वह मुझे पाप के गड़हे से निकाले ॥

सत्य अवतार का जन्म ।

लग भग छः सहस्र बरस हुए हैं कि परमेश्वर ने पहिले सत्य अवतार की बाचा किई । ईश्वर ने पहिले पुरुष को पवित्रमय बनाया और वह फुसलावे से अधीन होके पाप के वश में फंस गया परन्तु जब ईश्वर ने मनुष्य को दोषी

पृ० ठहराया तब दया करके उस्से बचानेहारे का बचन दिया। उस ने बेर बेर यह बचन स्थापन किया और उस समय से पहिले कि हिन्दू शास्त्र प्रचलित किये गये यह बचन परमेश्वर के धर्म्मपुस्तक में लिखा गया और भविष्यद्वक्ताओं ने भी वर्णन किया कि बचानेहारा किस समय और किस गांव में प्रगट होगा और किस वंश से निकलेगा॥ ५

अठारह सौ बरस से अधिक हुए हैं जब से बचानेहार अर्थात परमेश्वर का सत्य अवतार इस संसार में प्रगट हुआ। वह यहूदिया के देश में जो हिन्दुस्तान और इङ्गलिस्तान के बीच में और हिन्दुस्तान से चौदह सौ कोस के दूर पर

वायव्य कोण में है उस में उत्पन्न हुआ। प्राचीन समयों में वह देश ऐसा फलवन्त था कि जैसा वहां दूध और मधु बहता था। जिस वंश में सत्य अवतार प्रगट हुआ वह दाऊद का वंश था जो यहूदियों में सब से श्रीमान और महान राजा था। परन्तु उस समय से पहिले कि सत्य अवतार का प्रकाश हुआ यह वंश दीन हो गया था और धनवान दाऊद का एक सन्तान बढ़ई था। उस का नाम यूसफ़ था और वह मरियम नाम एक कुमारी कन्या से जो उसी महा प्रतापवान वंश की थी बचनदत्त हुआ था॥

इस लिये कि सत्य अवतार मनुष्यों का बचानेहारा हो

पृ० तो अवश्य था कि वह परमेश्वर और मनुष्य दोनों होय। ६
जो वह सांसारिक रीति मनुष्य और स्त्री से उत्पन्न होता तो
पापी स्वभाव प्राप्त करता इस कारण वह सांसारिक
रीति से नहीं परन्तु कुमारी के गर्भ से परमेश्वर की शक्ति
से उत्पन्न हुआ। उस कुमारी मरियम के समीप स्वर्गीय दूत
ने आ करके उस पर प्रगट किया कि तू पुत्र उत्पन्न करेगी
उस का नाम यिसू रखना। और यह भी उस पर प्रकाश
किया कि वह ईश्वर का पुत्र होगा और बड़ा राजा होके
सदा लों राज्य करेगा और उस के राज्य का अन्त कभी
न होगा। यिसू शब्द का अर्थ बचानेहारा है और वह

जगत का त्राता और मुक्तिदाता है। वह मसीह भी कहावता है जिस का अर्थ यह है किसी कार्य्य के लिये ठहराया गया॥

उस महाराजा ने जो उस समय यहूदिया और और देशों पर राज्य करता था यह आज्ञा प्रचारी कि जितनी प्रजा हैं उन्हें अपने अपने नगर में अपना नाम लिखाना अवश्य है और उस आज्ञा के अनुसार यूसफ़ और मरियम बैतलहम नामे अपने पुरखे दाऊद राजा के नगर में गये। जब बैतलहम में पहुंचे तो टिकाश्रय में जगह न पाई और उन्हें घोड़शाल में टिकना पड़ा। उन के वहां होतेही यिसू ने जन्म लिया और उस की मा ने उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रक्खा॥

चौपाई ।

यह संसार भयो अति पापी पाप के कारण भयो सन्तापी ।
कुमारी कन्या लिया अवतारा प्रभु यिसू तारनहारा ॥

उस देश में कितने गड़रिये थे जो खेत में रात को अपने झुण्डों के रखवाले थे । और परमेश्वर का एक दूत उन के पास आ खड़ा हुआ और प्रकाशमान ज्योति उन के चारों ओर चमकती थी । यह देखकर वे बहुत डर गये परन्तु दूत ने उन से कहा कि मत डरो क्योंकि देखो मैं तुम्हें आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जिस से सब लोगों को आनन्द होगा कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक

त्राणकर्त्ता अर्थात मसीह प्रभु जन्मा है। उसी समय स्वर्गीय सेना में से बहुतेरे उस दूत के सङ्ग प्रगट हुए और ईश्वर की स्तुति करते हुए बोले सब से ऊंचे स्थान में ईश्वर का गुणानुवाद और पृथिवी पर शान्ति होय मनुष्यों पर प्रसन्नता है॥

ऐसी स्तुति गाके दूतगण स्वर्ग को चले गये और गड़रिये आपस में कहने लगे आओ हम बैतलहम लों जाके यह बात जो हुई है जिसे परमेश्वर ने हम पर प्रगट किई है देखें। उन्हों ने शीघ्र जाके मरियम और यूसफ़ को और बालक को चरनी में पड़ा हुआ पाया। और सब सुन्नेहारे उन सब

बातों से जो गड़रियों ने उन से कहीं अचम्भित हुए और गड़रिये ईश्वर का गुणानुवाद और स्तुति करते हुए लौट आये ॥

आनन्द का समाचार जिसे दूत ने सुनाया सभों के लिये था सो हे प्रिय तुम्हारे लिये भी है यथा

दोहा ।

वृक्ष फलै न आप को सरिता पिवे न नीर ।
परस्वारथ के काज को ईश्वर धरा शरीर ॥

यिसू का मन्दिर में होना ।

जिस गांव में दूत ने मरियम पर प्रगट होके यिसू के जन्म

लेने का पता दिया उसी गांव में यूसफ़ बास करने लगा। चारों ओर अच्छे खेत वृक्ष और पर्वत दिखाई देते थे। परन्तु जो लोग वहां बास करते थे उन में से बहुधा अज्ञानी और कुकर्म्मी थे और उस गांव में यिसू ने अपना बालकपन बिताया॥

प्रत्येक बरस यरूसलीम नगर में तेवहार हुआ करता था और चारों ओर के यहूदी उस तेवहार के मान्ने के लिये वहां आया जाया करते थे। जब यिसू बारह बरस का था वह भी यूसफ़ और मरियम के सङ्ग तेवहार को गया। लोगों के समूह के समूह यरूसलीम को जाया करते और चलते

हुए गीत और भजन गाया करते थे। और उन में यूसफ़ और मरियम और यिसू भी थे॥

यरूसलीम में सात दिन रहके और मन्दिर में परमेश्वर की स्तुति और आराधना करके यूसफ़ और मरियम अपने घर को गये। वे समझते थे कि यिसू कहीं समूह के सङ्ग है सो उस की चिन्ता न करके चले गये। परन्तु रात को जब वह उन के पास नहीं आया तब उसे ढूंढ़ने और साथवाले बटोहियों से पूछने लगे। क्या तुम ने कहीं हमारे बालक यिसू को देखा है और जब उस का कोई पता न लगा तो वे लौटकर यरूसलीम में फिर आये। तीन दिन के पीछे उन्हों

यिसू का मन्दिर के बीच उपदेशकों से बात चीत करना ।

ने यिसू को मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठा हुआ उन की सुनता और उन से प्रश्न करते पाया। और जो लोग उस की सुनते थे सो सब उस की बुद्धि और उस के उत्तरों से विस्मित हुए ॥

जब उस को पाया तब उस की माता उस्से कहने लगी कि हे पुत्र हम से क्यों ऐसा किया देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढ़ते फिरे। उस ने उन से कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे क्या नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के विषय में लगा रहना अवश्य है। क्योंकि यिसू ईश्वर का पुत्र था और उस के स्वर्गबासी पिता की इच्छा ऐसी थी कि तू मेरा

कार्य्य कर। यूसफ़ और मरियम ने उस बात को जो उस ने उन से कही न समझा। पर उस की माता ने इन सब बातों को अपने मन में रक्खा॥

यिसू यूसफ़ और मरियम के सङ्ग नासरत नगर को चला और उन का आधीन होकर आज्ञाकारी रहा। उस के मुंह से कभी कोई बुरी बात न निकली। सब लोग उसे प्यार करते थे और ज्यों ज्यों वह वय में बढ़ता गया त्यों त्यों लोग उसे अधिक चाहने लगे वह अठारह बरस नासरत में बढ़ई का काम करता रहा। हे पढ़नेहारो क्या तुम्हें प्रतिदिन की रोटी के लिये परिश्रम करना पड़ता है। तो जान लो कि यिसू भी यह करके

तुम्हारे समान हुआ । क्या तुम धनवान हो तो कङ्गालों से घिण मत करो ॥

सत्य अवतार के प्रचारक का वर्णन ।

जब कोई राजा किसी नगर में जाने चाहता है तब मार्ग बनाने के लिये प्रचारक उस के आगे भेजा जाता है और प्रचारक के द्वारा से ऊंचे नीचे मार्ग चौरस बन जाते और रुकाव की वस्तें दूर किई जाती हैं । सत्य अवतार का ऐसा प्रचारक यूहन्ना था और वह यिसू मसीह से छः महीने पहिले प्रगट हुआ ॥

यूहन्ना बन और यर्दन नदी के आस पास के स्थानों में

यूहन्ना प्रचारक का यिसू के विषय उपदेश देना ।

फिरता था और ऊंट के रोम का वस्त्र पहिनता और अपनी कटि पर चमड़े का पटुका बांधता था और टीड़ियां और बनमधु उस का भोजन था। जब तीस बरस का हुआ तब प्रभु अर्थात् सत्य अवतार के मार्ग के सुधारने का प्रचार करने लगा और ऐसी सामर्थ और साहस से बोला कि आस पास के सकल लोग उस के बचन सुन्ने को निकले॥

चौपाई।

करो तैयार बाट की सारी. ईश्वर आवे देहु बोहारी।
वाको मारग सीधा करिये. सत्य विचार अपने चित धरिये॥

उस ने स्वर्ग के राज्य को प्रचार करके लोगों से कहा कि

पश्चात्ताप करो । उस के प्रचारने का अभिप्राय यह था कि लोग पाप को छोड़ परमेश्वर की ओर फिरें और इस सन्देश का कारण यह था कि धर्म्मपुस्तक में जो सत्य वेद है यह वर्णन है कि जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम नष्ट होगे । उन में से जिन्हों ने यूहन्ना का उपदेश सुना बहुतों ने पश्चात्ताप किया और उन को यर्दन नदी में बपतिस्मा अर्थात् जलसंस्कार देके उस ने इस रीति से उन पर प्रगट किया कि परमेश्वर उन के पापों का क्षमा करनेहारा है । लोग अचम्भित होके यह जाना चाहते थे कि क्या यह वही मसीह है जिस के प्रकाश की चर्चा भविष्यद्वक्ताओं ने किई । तब यूहन्ना ने

दृढ़ता से उन से कहा मैं वह नहीं परन्तु उस की जूतियों के तसमे खोलने के योग्य नहीं केवल उस का प्रचारक हूं। यूहन्ना ने लोगों को जताया कि विलम्ब मत करो और कहा कि अभी कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर लगी है इस लिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता है सो काटा जाता और आग में डाला जाता है। हे प्रियो हम लोग पेड़ों के समान हैं परमेश्वर चाहता है कि हम पवित्रताई का फल लावें जो ऐसा फल नहीं परन्तु पाप के फल लावें तो मृत्यु की कुल्हाड़ी से काटे जाकर नरक की आग में डाले जायेंगे। हमें पश्चात्ताप करना और इस भयानक दण्ड से बचना अवश्य है॥

चौपाई ।

देखो रूख वृक्ष जड़ आरा . मारत काटत ताहि कुहारा ।
जो वृक्ष आछो फल नहिं लावे. डारत काटि ले अग्नि जरावे ॥
डारो जाहि अगिन के माहीं . सो तो अगिन बुझन को नाहीं ।
निस्सन्देह जानो यह बाणी . बचन सत्य मम जानो प्राणी ॥

सत्य अवतार का बपतिस्मा पाना ।

यूहन्ना पश्चात्ताप का प्रचार करके लोगों को बपतिस्मा दिया करता था। जान्ना चाहिये कि किसी नदी के जल में पाप मिटाने की शक्ति नहीं है । परन्तु बपतिस्मा अर्थात् जलसंस्कार केवल इस बात का चिन्ह और मुद्रा है कि ईश्वर प्रभु यिसू

मसीह के कारण अपने आत्मा के द्वारा से हमारे मनों को शुद्ध और पवित्र करता है ॥

जब यूहन्ना बहुधा लोगों को बपतिस्मा दे चुका तो एक को अपनी ओर आते देखा जो निष्पाप था। और लोग जितने यों आये उन्हें क्षमा प्राप्त करने का प्रयोजन था परन्तु इस को इस कारण कि कभी पाप नहीं किया क्षमा का कुछ प्रयोजन नहीं था। यह जो आया सत्य अवतार प्रभु यिसू मसीह था। पहिले तो यूहन्ना उसे बपतिस्मा देने को अभिलाषी नहीं था और उस्से कहने लगा मुझे आप के हाथ से बपतिस्मा लेना उचित है और क्या आप मेरे पास आते

हैं। परन्तु यिसू ने कहा अब ऐसा होने दे क्योंकि इसी रीति से सब धर्म्म को पूरा करना हमें अवश्य है। एक कारण कि यिसू ने बपतिस्मा पाया यह था कि हम पर प्रगट करे कि मैं अपने पिता की सारी आज्ञाओं को मान्ने चाहता हूं॥

जब यिसू बपतिस्मा पा चुका तब एक अचम्भे की बात हुई अर्थात् स्वर्ग खुल गया और पवित्रात्मा कपोत के समान उतरके उस के ऊपर ठहरा और आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस्से मैं अति प्रसन्न हूं॥

सत्य वेद अर्थात् परमेश्वर के धर्म्मपुस्तक में यह लिखा है क्या खोजके तू ईश्वर को पा सक्ता है क्या तू सर्वसामर्थी

की पूर्णता को पहुंच सक्ता है सत्य यह है कि परमेश्वर के भेदों को जान नहीं सक्ते। इतना हम जानते हैं कि एक सत्य ईश्वर को छोड़ कोई दूसरा नहीं है। और देवी देवता हैं ही नहीं और ईश्वर पिता पुत्र पवित्रात्मा करके अपने को अपने बचन में प्रगट करता है। और यह तीन ईश्वर नहीं परन्तु एक है। परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को भेजा कि जगत को बचावे। परमेश्वर पुत्र अवतार लेके जगत में प्रगट हुआ। और परमेश्वर पवित्रात्मा विश्वास करनेहारों के मन को उजाला करके यिसू मसीह की बातों को उन पर प्रकाश करता है। परमेश्वर पिता अपने प्रिय पुत्र से अति प्रसन्न

है। क्या तुम यिसू मसीह को त्राणकर्त्ता जानके उसे ग्रहण करते हो। जो उसे ग्रहण करके उस पर विश्वास करोगे तो पवित्रात्मा तुम्हारे मन में बास करेगा और तुम्हें कोमल पवित्र और अति आनन्दित करेगा॥

यिसू के बारह शिष्यों का वर्णन।

जब बपतिस्मा पा चुका तब प्रभु यिसू मसीह सुसमाचार को प्रकाश करने लगा और वह ऐसी सामर्थ्य और प्रभुता से सिखलाया करता था कि बहुधा लोग उस की सुन्ने को आया करते थे। उस ने बारह शिष्यों को चुन लिया कि वे उस के सङ्ग चल चलके उस का उपदेश सुनें और उस के आश्चर्य्य

कर्म्मों को देखें और आपही उपदेशक बनके गांव गांव और नगर नगर में फिरके लोगों को सुसमाचार सुनावें। इन शिष्यों में से कई एक लोग मछुवे होके यहूदिया देश की झीलों में मछलियों को पकड़ते हुए जीविका पाते थे। एक समय यिसू जब उन के सङ्ग थे तो उस ने उन से कहा मछलियों के पकड़ने को अपने जालों को डालो। उन में से एक ने उस्से कहा हे गुरु हम ने सारी रात परिश्रम किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी मैं आप की बात पर जाल डालूंगा। जब उन्हों ने ऐसा किया तब बहुत मछलियां बझाईं और उन का जाल फटने लगा। उस के पीछे मसीह ने उन

से कहा मेरे पीछे आओ मैं तुम को मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा। और इस का अर्थ यह था कि उन का कर्म्म मनुष्यों को यिसू के विषय में सिखावना और उन्हें उस की ओर फेरना होगा। और जब मसीह ने उन से यह बात कही तो वे तुरन्त जालों को छोड़के उस के पीछे हो लिये॥

उस समय के पीछे मसीह ने इन बारहों को उन के पवित्र कर्म्मों में प्रवेश किया। उन्हें इस कार्य्य में दाखिल करने के पहिले वह पर्वत में जाकर रात भर प्रार्थना करता रहा। जब तड़का हुआ तब अपने शिष्यों को बुलाके उन में से बारह को चुन लिया और उन्हें अपना प्रेरित ठहराया।

मसीह का बारह प्रेरितों को ठहराना ।

प्रेरित शब्द का अर्थ यह है भेजा हुआ और यह जो प्रेरित बने मसीह की ओर से भेजे गये कि सुसमाचार प्रचार करके मसीह की साक्षी दिया करें और रोगियों को चङ्गा करें और और आश्चर्य्यकर्म्म करें ॥

एक को छोड़ सब प्रेरित भले मनुष्य थे और यद्यपि यिसू ने उस बुरे मनुष्य को प्रेरित ठहराया तथापि वह जानता था कि यह धूर्त्त होके शिष्य के भेष में आया है ॥

हम सभों को यिसू मसीह का शिष्य होना और उस के उपदेश के अनुसार जीवन काटना और उस के समान बन्ना अवश्य है ॥

सत्य अवतार के आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन।

चौपाई।

जब लगि रहेउ जगत में स्वामी . कियेउ सुकर्म्म सो अन्तरजामी।
बड़ा बड़ा आश्चर्य्य दिखावा . बहुतेरन वाञ्छित फल पावा।
दृष्टि दान दीन्हे अन्धन को . पङ्गामी कीन्हे पङ्गुन को।
और हस्त टुण्डन को दीन्हे . अर्द्धांगिन को चङ्गा कीन्हें।
सुस्थिर कीन्हे विविध रोगिन को . और शुद्ध कीन्हे कोढ़िन को।
जीव दान मृतकन को दीन्हा . तदपि न बहुतेरे तेहि चीन्हा।
पांच सात रोटिन से स्वामी . बहु सहस्र को अन्तरजामी।
उदर पूर्ण करि सभै जिवांवा . परमानन्द सकल जन पावा।
और गमन सागर पर कीन्हा . आंधिहि तुरत रोक सो दीन्हा।

दोहा।

ऐसे बहु अचरज किये कहां लगि कहूं बखान।
संछेपहि वर्णन कियो सुनहु बन्धु दै कान॥

जब कोई महाराजा पत्रिका भेजता है तो उस पर राजा की छाप किई जाती है। और छाप से जाना जाता है कि पत्रिका यथार्थ है। इस प्रकार से जब परमेश्वर ने उपदेशकों को अपनी इच्छा प्रगट करने के लिये भेजा तब उन्हें आश्चर्य्य कर्म्म करने की सामर्थ दिई। यह कर्म्म और लक्षण प्रमाण थे कि उपदेशक परमेश्वर की ओर से आये हैं। सत्य अवतार ने भी इस अभिप्राय से कि लोग उस पर विश्वास करें

नाना प्रकार के आश्चर्य्यकर्म्म करता था और अपने आश्चर्य्य कर्म्मों की ओर सैन करके कहा मेरे कर्म्मों के कारण मेरी प्रतीत करो। यिसू के और भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के आश्चर्य्यों में यह भेद था कि यिसू ने निज अपनी सामर्थ से परन्तु उन्हों ने परमेश्वर की सहायता मांगकर आश्चर्य्य कर्म्म किये। यिसू के आश्चर्य्यों में से थोड़ों का वर्णन इस पुस्तक में किया जायगा॥

पांच सहस्र जनों को जेवाना।

लोगों की बड़ी भीड़ यिसू के पीछे उस के उपदेश सुन्ने और उस के आश्चर्य्यकर्म्मों के देखने के लिये हो लिया

पांच सहस जनों को जेवाना ।

पृ0 करती थी। एक समय स्त्रियों और बालकों को छोड़ पांच २0
सहस्र के अटकल थे जो उस के पास आये और जब उस ने उन्हें रोटी देने का मन किया तब एक शिष्य कहने लगा हमारे यहां पांच रोटी और दो मछलियां हैं परन्तु इतने लोगों के लिये यह क्या हैं। तब यिसू ने सभों को घास पर बैठालके वे रोटियां लिईं और धन्य मानके शिष्यों को बांट दिईं और शिष्यों ने बैठनेहारों को और वैसाही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे उतनी दिईं। और उस ने रोटियों और मछलियों को इतना बढ़ाया कि जब सब तृप्त हुए तब जो टुकड़े बच रहे उन की बारह टोकरियां भरी उठाईं॥

यिसू के इस आश्चर्य्य से हम न केवल सत्य अवतार की सामर्थ देखें परन्तु यह भी सीखें कि खाने से पहिले धन्य मांगना और रोटी को न गंवाना अवश्य है ॥

अन्धे को नेत्र देना ।

एक समय जब यिसू किसी नगर से निकलता था और बड़ी भीड़ उस के पीछे हो लिई थी तब एक अन्धा मनुष्य जो मार्ग के किनारे बैठके भीख मांगा करता था जब यह सुना कि यिसू नासरी आता है पुकारने लगा हे दाऊद के पुत्र यिसू मुझ पर दया कीजिये । और जब लोग उसे डांटके चुप किया चाहते थे तो चुप न हुआ परन्तु अधिक

चिल्लाता रहा हे यिसू दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कीजिये॥

तब यिसू ने अन्धे के बुलाने को कहा और लोगों ने उसे बुलाके कहा धीरज धर उठ वह तुझे बुलाता है। वह अपना कपड़ा फेंकके उठा और यिसू पास आया और यिसू ने उसे कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं। अन्धा बोला हे गुरु मैं अपनी दृष्टि पाऊं। यिसू ने उसे कहा चला जा तेरे विश्वास ने तुझे चङ्गा किया और वह तुरन्त देखने लगा॥

दोहा।

गुरु यिसू दानी बड़े दान दिये बहु भांति।
नैन दान आंधर दिये निज भवन सराहत जात॥

समस्त लोग आत्मिक रीति से अन्धे हैं। यिसू हमें आत्मिक बुद्धि और ज्ञान देके हमें दृष्टि दे सक्ता है। इस कारण अवश्य है कि जिस समय मसीह मार्ग में है अर्थात् अपने को सत्य बचन में हम पर प्रगट करता है प्रत्येक मनुष्य उस की ओर पुकारें हे गुरु दया करके मुझ अन्धकारमय को दृष्टि दे ॥

कोढ़ी को पावन करना।

एक समय एक कोढ़ी ने यिसू के पास आ उस को प्रणाम कर उस्से कहा कि हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सक्ते हैं। यिसू ने उस बेचारे पर दया करके अपना हाथ

बढ़ाया और उसे छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा और उस का कोढ़ तुरन्त जाता रहा ॥

पाप कोढ़ के समान है। हम समस्त लोग पाप के रोगी हैं और परमेश्वर की दृष्टि में घिनौने कोढ़ी के समान हैं। शुद्ध होने के बिना हम स्वर्गलोक में प्रवेश नहीं कर सक्ते। और यिसू को छोड़ कोई दूसरा हमें शुद्ध नहीं कर सक्ता इस कारण अवश्य है कि हम उस्से बिन्ती करें हे प्रभु हमें पाप से बचाके हमारे मनों को शुद्ध और पवित्र कर ॥

बिधवा के पुत्र को जीवदान देना।

एक दिन जब यिसू किसी नगर के फाटक के पास से जाता

था तब देखा कि लोग एक मृतक को बाहर लिये जाते थे जो अपनी मा का एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी। और नगर के बहुधा लोग उस पर दया करके उस के सङ्ग थे॥

यिसू ने बिधवा को रोती हुई देखा और दयावन्त होके उस्से कहा कि मत रो। यह कहके उस ने अर्थी को छुआ और उठानेहारे खड़े हुए और देखनेहारे अचम्भित हुए कि क्या हुआ चाहता है। तब यिसू ने कहा हे तरुण मैं तुझ से कहता हूं उठ और मृतक उठ बैठा और बोलने लगा। और यिसू ने उसे उस की मा को सौंप दिया। इस आश्चर्य्यकर्म्म को देखकर रोनेहारों के आंसू आनन्द से बदल गये और

सभों को भय हुआ और वे ईश्वर की स्तुति करके बोले हमारे बीच में बड़ा भविष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है ॥

क्या जाने मृत्यु उतावली से हमारे पास आवेगी छोटे बड़े जवान और बूढ़े सब के सब मृत्यु के वश में आ जाते हैं अवश्य है कि हम उस के आने के लिये चौकस रहें जिस्तें जब वह आवे तब हम आनन्दित हों और हाय हाय न करें ॥

चार दिन के मृतक को जिलाना ।

यरूसलीम नगर के निकट कोस एक दूर एक गांव में इलीअजर और मर्था और मरियम उस की दो बहिनें बास करती थीं । वे भले लोग थे और इस कारण यिसू उन से

बड़ा प्रेम रखता था और उन के घर को जाया करता था॥

एक समय जब यिसू किसी दूर देश में था तब इलीअजर रोगी हुआ। सो दोनों बहिनों ने यिसू को कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार करते हैं वह रोगी है परन्तु यिसू दो दिन लों उसी स्थान में रहा और तुरन्त इलीअजर के पास नहीं गया॥

जब यिसू उस ग्राम में पहुंचा जहां दोनों बहिनें रहती थीं तब क्या पाया कि इलीअजर को मरे हुए चार दिन क़बर में हो चुके थे। मर्था ने जब सुना कि यिसू आता है तब जाके उस्से भेंट किई और कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा

भाई न मरता। यिसू ने उस्से कहा कि तेरा भाई जी उठेगा। मर्था ने उत्तर दिया मैं जानती हूं कि पिछले दिन पुनरुत्थान में वह जी उठेगा। यिसू ने उस्से कहा मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूं जो मुझ पर विश्वास करे सो यदि मर जाय तौ भी जियेगा। क्या तू इस बात को विश्वास करती है। वह बोली हां प्रभु मैं ने विश्वास किया है कि ईश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था सो आप ही हैं॥

उस के पीछे मर्था ने मरियम से कहा कि गुरु आये हैं और तुझे बुलाते हैं और वह शीघ्र उठके यिसू पास आई।

और वह और उस के साथी रोते रहे। तब यिसू ने कहा तुम ने उसे कहां रक्खा है वे बोले हे प्रभु आके देखिये। यिसू रोया। तब देखनेहारे कहने लगे देखो यह उसे कैसा प्यार करता था। और कितनों ने कहा क्या यह जिस ने अन्धे की आंखें खोलीं यह भी नहीं कर सक्ता कि यह मनुष्य नहीं मरता॥

इलीअजर गुफा में रक्खा गया और गुफा पर पत्थर धरा था। यिसू ने कहा कि पत्थर सरकाओ तब उस ने अपने पिता का धन्य मानके बड़े शब्द से पुकारा इलीअजर बाहर आ और वह मृतक चट्टर से हाथ पांव बांधे हुए बाहर

आया और यिसू ने कहा उसे खोलो और जाने दो ॥

वह समय आता है जिस में मृतक ईश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे और उस समय जो लोग मसीह पर विश्वास करते हैं वह सदा का आनन्द और अनन्तजीवन प्राप्त करेंगे। परन्तु इस के विरुद्ध दुष्ट लोग अनन्त दण्ड सहने के लिये उठेंगे ॥

आंधी को थांम देना।

एक समय शिष्य नाव में होके समुद्र पर चलते थे। जब वे तीर से कुछ दूर लों पहुंचे तब बड़ी बयार हुई और नाव लहरों से उछल रही थी। रात के चौथे पहर में यिसू समुद्र पर चलते हुए शिष्यों के पास गया। वे उसे समुद्र पर चलते

यिसू का समुद्र पर चलना ।

देखके घबरा गये। यिसू ने उन से कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत और उन के पास नाव पर चढ़ा और बयार थम गई॥

एक दिन सांझ को जब यिसू दिन भर झील के किनारे उपदेश दे रहा था तो उस ने अपने शिष्यों से कहा कि आओ हम झील के उस पार चलें। उन के चले जाने के थोड़े समय के पीछे बड़ी आंधी उठी और लहरें नाव पर ऐसी लगीं कि वह भरने लगी। और शिष्य यद्यपि कितने मछुवे थे तथापि डर के मारे कांपने लगे। इस समय यिसू नाव की पिछली ओर तकिया दिये हुए सोता था॥

अन्त को शिष्यों ने यिसू को जगाके कहा हे प्रभु हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं। तब यिसू ने उन से कहा हे अल्प विश्वासियो क्यों डरते हो। सन्देह नहीं है कि जिस समय वह नाव में था वे भले चंगे थे। तब उठके उस ने बयार को डांटा और समुद्र से कहा चुप रह सो तुरन्त मन्द हो गया। जो लोग नाव में थे जब यह देखा तो अचम्भा करके कहने लगे यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उस की आज्ञा मानते हैं॥

बयार और समुद्र ने यिसू की आज्ञा क्यों मानी। इस कारण कि वह उन का बनानेहारा था॥

चौपाई ।

उठी लहर जल समुद्र की गाढ़ी . भरो आनि जल नाव में बाढ़ी ।
सबे शिष्य देखि घबराये . भई सोच संशय मे आये ।
प्रभु प्रभु पुकारे एक बारा . जागो लेहु सुध अब हमारा ।
प्राण जात है हमें बचाओ . जागो हम पर कृपा जनाओ ।
उन्हके शब्द सुनत प्रभु जागे . जागत शब्द निहारन लागे ।
सुनो जो विप्रीत तुम्ह जन सारे . मेरे भक्त डरो किहं बारे ।
तब प्रभु आंधी सागर डांटा . चैन भई सब घाट और बाटा ।

हम लोग केवट के समान जीवनसागर पर चलते हैं और पाप की बड़ी आंधी उठी है अवश्य है कि यिसू को पुकारें हे प्रभु हमें बचाइये । उस पर सारे मन से आशा

रक्खो और वह तुम्हें स्वर्ग के परमानन्दी तीर्थ के पास पहुंचा देगा ॥

यिसू के कितने आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन हो चुका है। परन्तु कदाचित कोई यह कहे कि हमारे शास्त्रों पुराणों में इन से अधिक अद्भुत आश्चर्य्यकर्म्मों का वर्णन है। जैसा कि कृष्ण ने अपनी उंगली पर पर्वत थांभा। और एक ऋषि ने अपने मुख से सात समुद्रों को सुखा दिया इत्यादि। परन्तु बूझना अवश्य है कि यिसू के आश्चर्य्यों और उन आश्चर्य्यों में जो शास्त्र और पुराणों में वर्णन होते हैं सूर्य्य पृथिवी का भेद है क्योंकि यिसू के आश्चर्य्य सचमुच दिखलाये गये परन्तु

दूसरे केवल कल्पना और बनावट हैं। यिसू के आश्चर्य्यकर्म्म विश्वास योग्य साक्षी देनेहारे के साम्हने दिखलाये गये और ये साक्षी देनेहारे उन आश्चर्य्यों को अस्वीकार करने से मरना भी अधिक अच्छा जानते थे। परन्तु जिन आश्चर्य्यों का वर्णन शास्त्र पुराणों में मिलता है उन का कोई देखनेहारा नहीं था और जो कवि लोग उन का वर्णन करते हैं वे उस समय में नहीं जीते थे जब कहा जाता है कि आश्चर्य्यकर्म्म दिखलाये गये परन्तु इस के विरुद्ध उस समय के बहुत दिन पीछे जीते थे। इन कारणों से जितने लोग बुद्धिमान हैं वे मसीह के आश्चर्य्यकर्म्मों को ग्रहण करेंगे और उन

आश्चर्य्यों को जो शास्त्र पुराणों में वर्णन होते हैं तज देंगे ॥

सत्य अवतार का उपदेश ।

गुरु का प्रयोजन ।

जो याची बड़े और निष्पथवन में भटकते फिरते हैं उन के लिये ज्ञानी पथिदर्शक अवश्य है । वन में जानवरों की बहुधा घुमाव पगदण्डियां हों और याचियों को कोई कहे उस में जाओ और कोई कहे इस में चलो । जो पथिदर्शक

अच्छी रीति से वन को न जाने तो जितने लोग उस के उपदेश के अनुसार चलें वे अधिक भटक जायेंगे। हम सांसारिक वन में यात्रियों के समान हैं और स्वर्गीय नगर का मार्ग ढूंढ़ते हैं। एक गुरु एक मार्ग और दूसरा दूसरा मार्ग बताता है जो पहिले के विरुद्ध है और तीसरा गुरु और ही मार्ग बताता है जो उन दोनों के विरुद्ध है और यह कहना कि तीनों मार्ग एक ही स्थान को गये बुद्धि के विरुद्ध है। पूर्व और पच्छिम और ज्योति और अन्धकार में जितना भेद है इतना भेद इस देश के गुरुओं के उपदेश में है और इतने मार्गों के द्वारा से एक ही स्थान में पहुंचना अनहोना है॥

सत्य गुरु को निष्कलङ्क होना अवश्य है। जो वह आपही पापी और कलङ्की हो तो क्योंकर अपने शिष्यों को बचा सक्ता है। जो वह परमेश्वर को न पहिचाने तो उस अन्धे की नाईं है जो अन्धों को मार्ग बताने में परिश्रम करता है और दोनों गड्ढे में गिर पड़ते हैं। सत्य गुरु को अपने भक्तों का शुभसूचक होना अवश्य है और वह आपस्वार्थी न होवे। बहुधा गुरु अपने चेलों के द्वारा से सांसारिक सुख प्राप्त करने के अभिलाषी हैं यथा

श्लोक।

गुरवोबहवस्सन्तिशिष्यवित्तापहारकाः दुर्लभस्सद्गुरुर्देविशिष्यसन्तापहारकः।

अर्थात् वे गुरू जो अपने शिष्य के द्रव्य को छीन लेते हैं बहुतेरे हैं। परन्तु ऐसे गुरू का मिलना जो शिष्य के दुःख को उठा ले जायगा यह अति कठिन है॥

वर्णन हो चुका है कि यिसू मसीह निष्कलङ्क अवतार है। वह हमें परमेश्वर का गुण बता सक्ता है क्योंकि वह आरम्भ में परमेश्वर के सङ्ग था और आपही परमेश्वर है। वह सेवा करवाने को नहीं परन्तु सेवा करने को और बहुतों के उद्धार के लिये अपना प्राण देने को जगत में आया॥

यिसू ऐसा गुरू नहीं है जो केवल एक देश के लोगों को मुक्ति का मार्ग बताने आया परन्तु वह जगद्गुरू और सकल

लोगों का उपदेशक है। उस के प्रगट होने के पहिले जब भविष्यद्वक्ताओं ने उस का वर्णन किया तो उसे अन्यदेशियों के प्रकाश करने की ज्योति कहा। और उस ने अपने विषय में कहा मैं जगत का प्रकाश हूं जो मेरे पीछे आवे सो अन्धकार में न चलेगा परन्तु जीवन का उजियाला पावेगा॥

चौपाई।

जो स्वर्ग से उतरा है आई. स्वर्गरूप स्थित है भाई।
ताहि मनुष्य पुत्र मति जानो. निश्चय ईश्वर स्वर्गी तुम मानो।
वा बिन स्वर्ग शक्ति नहि काहू. वा बिन कभू न होय निबाहू।
जो जो वाको प्रतीति करिहैं. निश्चय मन ता में धरि हैं।
तिन को सर्व नाश नहि होई. किसू प्रकार जानो सब कोई।

जीवन में उन्ह को प्रवेशा . आनन्द जीवन होइ सुरेशा ।
प्रापत आनन्द जीवन होई . यह निश्चय मानो सब कोई।

नवीन जन्म का वर्णन ।

निकोदेमुस नाम यहूदियों का एक प्रधान था और वह यिसू के आश्चर्य्यकर्म्मों के विषय में सुनकर उस्से अधिक उपदेश सीखा चाहता था। सो रात को यिसू के पास आके उस ने उस्से कहा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वर की ओर से उपदेशक होके आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्यकर्म्मों को जो आप करते हैं जो ईश्वर उस के सङ्ग न हो तो नहीं कर सक्ता। यिसू ने उस को उत्तर दिया कि यदि कोई फिरके

निकोदेमुस और प्रभु का सुसंवाद ।

न जन्मे तो ईश्वर का राज्य नहीं देख सक्ता। निकोदेमुस ने यिसू के कहने का अर्थ न समझके उस्से पूछा कि मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सक्ता है। हम इस का कुछ वर्णन करेंगे॥

सकल मनुष्य धर्म्महीन और मन मलीन होके उत्पन्न होते हैं। छोटे बालक भी बूढ़ी चाल को प्रगट करके ऊपर के वर्णन को प्रमाण करते हैं। फिरके जन्म का अर्थ यह है कि नवीन मन को प्राप्त करें। स्वर्गलोक में बास करने से पहिले हमारे मन को पवित्र बन्ना अवश्य है। वह क्योंकर पवित्र बने। केवल पवित्रात्मा के उस में बास करने से वह शुद्ध और

पवित्र बन सक्ता है। जैसे कोई वस्तु जब जल में धोई जाती शुद्ध हो जाती है वैसेही पवित्रात्मा मन को शुद्ध और पवित्र करता है॥

यिसू ने निकोदेमुस को न केवल यह उपदेश दिया कि पवित्रात्मा मन को शुद्ध करने के योग्य है परन्तु उस पर परमेश्वर पिता का प्रेम प्रगट किया कि उस ने पापियों के बचाने के लिये कैसा अच्छा उपाय निकाला। कहा कि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो किन्तु अनन्त जीवन पावे। यह भी कहा कि ईश्वर ने

अपने पुत्र को जगत में इस लिये नहीं भेजा कि जगत को दण्ड के योग्य ठहरावे परन्तु इस लिये कि जगत उस के द्वारा से त्राण पावे। जब निकोदेमुस ये बातें सुन चुका तब जाना कि यिसू ईश्वर का पुत्र और पापियों का बचानेहारा है॥

क्या तुम ने फिरके यह जन्म पाया। क्या पवित्रात्मा ने तुम्हें नवीन मन दिया है। क्या तुम पाप से घिन करते और पवित्रताई से प्रेम रखते हो। यदि कोई यह प्रश्न करे कि हम क्योंकर पवित्रात्मा की सहायता पा सकें तो परमेश्वर के बचन में यह लिखा है कि यदि तुम बुरे होके अपने बालकों को अच्छे दान देने जानते हो तो कितना अधिक करके

तुम्हारा स्वर्गबासी पिता उन्हों को जो उस्से मांगते हैं उत्तम बस्तु देगा ॥

पहाड़ी उपदेश ।

यिसू का सब से बड़ा उपदेश जो सत्य वेद में मिलता है उसे पहाड़ी उपदेश कहते हैं इस कारण कि एक पहाड़ पर सुनाया गया। जो उस में समाप्त है उस का इस पुस्तक में केवल थोड़ा लिख सक्ते हैं। जो कोई उसे सम्पूर्ण रीति से पढ़ा चाहे तो वह उपदेश सत्य वेद अर्थात् धर्म्मपुस्तक के उस भाग में जो मत्तीरचित कहावता है पाया जायगा ॥

उस उपदेश के प्रथम भाग में यिसू ने अपने शिष्यों को

सिखाया कि कौन लोग धन्य हैं। यह नहीं कहा कि धन्य वे जो सम्पत्तिवान और प्रधान हैं। परन्तु यह कहा कि धन्य वे जो मन में दीन हैं। धन्य वे जो पाप के कारण शोक करते हैं। धन्य वे जो नम्र हैं। धन्य वे जो दयावन्त हैं। धन्य वे जिन के मन शुद्ध हैं। धन्य वे जो मेल करवैये हैं। धन्य वे जो धर्म्म के कारण सताए जाते हैं इत्यादि ॥

मनुष्यों की रीति यह है कि किसी के कर्म्मों पर दृष्टि करके कहते हैं कि करनेहारा भला अथवा बुरा है परन्तु यिसू ने शिक्षा दिई कि परमेश्वर मन पर दृष्टि करता है और उस की दृष्टि में मनसा वाचा कर्म्मणा सब एकही हैं।

इस के अनुसार यिसू ने उस उपदेश में कहा तुम ने सुना है कि आगे के लोगों से कहा गया था कि परस्त्रीगमन मत कर। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुइच्छा से दृष्टि करे वह अपने मन में उस्से व्यभिचार कर चुका है॥

फिर यिसू ने किरिया खाने को बरजके कहा कोई किरिया मत खाओ न स्वर्ग की क्योंकि वह ईश्वर का सिंहासन है न धरती की क्योंकि वह उस के चरणों की पीढ़ी है। अपने सिर की भी किरिया मत खा क्योंकि तू एक बाल को उजला अथवा काला नहीं कर सक्ता है। परन्तु तुम्हारी बात चीत

हां हां नहीं नहीं होवे जो कुछ इन से अधिक है सो उस दुष्ट से होता है ॥

यिसू ने यह उपदेश भी दिया कि सभों को प्रेम रखना अवश्य है। कहा तुम ने सुना है कि कहा गया था कि अपने परोसी को प्यार कर और अपने बैरी से बैर कर। परन्तु मैं तुम से कहता हूं कि अपने बैरियों को प्यार करो। जो तुम्हें स्राप देवें तुम उन्हें आशीस देओ। जो तुम से बैर करें उन से भलाई करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें सतावें उन के लिये प्रार्थना करो जिस्तें तुम अपने स्वर्गबासी पिता के सन्तान हो। क्योंकि वह बुरे और भले लोगों पर अपना

सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों और अधर्म्मियों पर मेंह बरसाता है ॥

यिसू ने यह भी शिक्षा दिई कि जब प्रार्थना करें तब मनुष्यों को दिखाने के लिये सभा के घरों में और सड़कों के कोनों में खड़ा होना अवश्य नहीं है और व्यर्थ बातें न बोलें। एक दिन जब उस के शिष्यों ने उस्से बिन्ती किई कि हे प्रभु हमें प्रार्थना करने को सिखा तो उस ने कहा इस रीति से प्रार्थना करो ॥

हे हमारे स्वर्गबासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय। तेरा राज्य आवे। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में वैसी ही पृथिवी

पर पूरी होवे । हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे और जैसा हम अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं तैसा हमारे ऋणों को क्षमा कर और हमें परीक्षा में मत डाल परन्तु दुष्ट से बचा क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरी है। आमीन॥

यिसू यह प्रार्थना सिखाके हमें बताता है कि ईश्वर को अपना स्वर्गवासी पिता कहें । हमें प्रार्थना करना अवश्य है कि सकल लोग ईश्वर को आदर करें और उस की आज्ञाओं को मानें। प्रतिदिन की रोटी के लिये प्रार्थना करना अवश्य है और यह कि यिसू मसीह के द्वारा से ईश्वर हमारे पापों को क्षमा करे और हमें दुष्ट से बचावे ॥

यह इस रीति का उत्तम दृष्टान्त है कि उसे दृष्टान्तों का मोती कहें । एक धनवान मनुष्य के दो पुत्र थे। छोटे ने पिता से कहा हे पिता सम्पत्ति में से जो मेरा अंश हो सो मुझे दीजिये । और पिता ने उन को अपनी सम्पत्ति बांट दिई । बहुत दिन नहीं बीते कि छोटा पुत्र सब कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपन में दिन बिताते हुए अपनी सम्पत्ति उड़ा दिई । जब वह सब कुछ उड़ा चुका तब उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वह कङ्गाल हो गया । जो लुचपन में उस के सङ्गी थे वे उस की सहायता नहीं करते

और वह इस रीति से दुराचार हुआ कि सुअर चराने की अवस्था में पड़ा। और इस कारण कि किसी से उसे खाने को नहीं मिला वह उन चूनियों से जो सुअर खाया करते हैं अपना पेट भरने चाहता था। जब वह इस रीति से दुःखी हुआ तब पिता का घर स्मरण में आया और वह कहने लगा कि मेरे पिता के कितने मजूरों को भोजन से अधिक रोटी होती है और मैं भूख से मरता हूं। मैं उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उसे कहूंगा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और आप के साम्हने पाप किया है मैं फिर आप का पुत्र कहाने योग्य नहीं हूं मुझे अपने मजूरों में से एक के समान कीजिये॥

तब उठके वह अपने पिता के पास चला पर वह दूर ही था कि उस के पिता ने उसे देखके दया किई और दौड़के उस के गले में लपटके उसे चूमा। पुत्र ने उस्से कहा हे पिता मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और आप के साम्हने पाप किया है और फिर आप का पुत्र कहाने के योग्य नहीं हूं। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा सब से उत्तम वस्त्र निकालके उसे पहिनाओ और उस के हाथ में अंगूठी और पांव में जूते पहिनाओ और मोटा बछड़ा लाके मारो जिस्तें हम खावें और आनन्द करें क्योंकि यह मेरा पुत्र मुआ था फिर जिया है खो गया था फिर मिला है॥

उड़ाऊ पुत्र का घर को फिर लौटना और पिता का उसे फिर ग्रहण करना।

इस दृष्टान्त में जो पिता कहाता है उस्से ईश्वर हमारा स्वर्गबासी पिता अर्थ है। हम लोग छोटे पुत्र के समान हैं हम पाप के पथों में जो दूर लों गये गुम हुए। परन्तु हमारा स्वर्गबासी पिता हमें क्षमा करने को सिद्ध है। वह कहता है कि हे फिरे हुए बालको फिर आओ। मैं मसीह के कारण तुम्हारे पापों को क्षमा करूंगा और तुम्हें धर्म्म का बस्त्र पहिराऊंगा और जैसा पिता ने पुत्र को जो खो गया था ग्रहण किया वैसाही मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा। हे प्रियो अपने पापों से पश्चात्ताप करके अपने स्वर्गबासी पिता की ओर फिरो॥

चौपाई ।

तात परयत्न मूल है जोई . जो पापी सन्मुख प्रभु होई ।
ईश्वर आगे पाप कबूले . तापर ईश्वर प्रेम अति फूले ॥
पुत्र प्रेमतें अधिक पियारा . करे कृपा तापर करतारा ।
याही लोक सुख आनन्द दैहै. अन्त परलोक मुक्त स्वर्ग जैहै ॥

दयालु समरूनी का दृष्टान्त ।

यहूदियों के देश में कितने अन्यदेशी बास करते थे जिन्हें समरूनी कहते थे। यहूदी लोग उन से अति घिन छूत रखते थे और उन के सङ्ग व्यवहार नहीं करते । एक दिन यह दृष्टान्त करके यिसू ने शिक्षा दिई कि सकल लोग हमारे परोसी हैं ॥

एक मनुष्य यरूसलीम से यरिहो गांव को जाते हुए डाकुओं के हाथ पड़ा। उन्हों ने उस के बस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमुआ छोड़के चले गये। ऐसा हुआ कि कोई याजक उस मार्ग होकर जाता रहा परन्तु उस बेचारे को देखकर सामे से होके चला गया। इसी रीति से एक और मनुष्य वहीं पहुंचा जो यहूदियों के मन्दिरों में सहायता देता रहा और उस घायल किये हुए को देखके वह भी चला गया। परन्तु एक समरूनी पथिक ने जब उसे देखा तब उस पर दया उपजी और यद्यपि जानता था कि यह यहूदी है तथापि उस की सहायता किई। यह कहके कि कदाचित डाकू

अब लग निकट हैं मुझे शीघ्र चलना अवश्य है उस ने बेचारे को नहीं त्यागा परन्तु इस के विरुद्ध उस पास जाके उस के घाओं पर तेल और दाखरस डालके पट्टियां बांधीं और उसे अपने पशु पर बैठाके सराय में लाया और बिहान हुए दो सूकी भठियारे को दिई और उस्से कहा उस की सेवा कर और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा तब तुझे भर दूंगा ॥

बहुधा लोग सोचते हैं कि हमें जात कुटुम्ब के लोगों पर दया करना अवश्य है और बस । परन्तु ईश्वर की इच्छा यह है कि सभों की हां बैरियों की भी भलाई करें ॥

प्रभु यिसू मसीह के उपदेश का वर्णन कुछ हो चुका है निस्सन्देह उचित है कि उस के विषय में यह कहा जाय कि किसी मनुष्य ने इस मनुष्य की नाईं बात न किई ॥

यिसू मसीह का मारा जाना और जी उठना ।

यिसू का बधन होना ।

जिस रात यिसू पकड़वाया गया वह पकड़े जाने के पहिले अपने शिष्यों समेत यरूसलीम के निकट एक बारी में गया। वहां वह उन से थोड़ा आगे बढ़के मुंह के बल गिरा और प्रार्थना करके कहा हे मेरे पिता जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पास

से टल जाय तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा न होवे पर जैसा तू चाहता है। कटोरे का अर्थ यह था अर्थात दुःख और मृत्यु जो उस के लिये होनेवाली थी। जब यिसू शिष्यों के पास फिर आया तब उन्हें सोते पाया। फिर दूसरी बेर अलग गया और बड़े सङ्कट में होके अधिक दृढ़ता से प्रार्थना किई। और उस का पसीना ऐसा हुआ जैसा लोहू के टपके जो भूमि पर गिरें। जब तीसरी बेर जाके प्रार्थना कर चुका तब अपने शिष्यों के पास आके उन्हें जगाया और कहा कि घड़ी आ पहुंची है॥

यहूदियों के प्रधान याजक यिसू से डाह रखते और उसे

मार डालना चाहते थे। यहूदा इसकरयूती जो बारह प्रेरितों में से एक था दुष्ट और लालची था। उस ने प्रधान याजकों से तीस रुपैया पाके यिसू को उन के हवाले करने की प्रतिज्ञा किई। सो प्यादों को लेके दीपक और मसाल और हथियार लिये हुए उस बारी में आया और यिसू को चूमके उसे उन पर प्रगट किया। तब सिपाहियों ने यिसू को पकड़के उसे बांधा और उस समय उस के सारे शिष्य उसे त्यागकर भाग गये। यिसू सर्वसामर्थी था और जो चाहता तो अपने को बचा सक्ता परन्तु इस कारण कि पापियों को बचाने आया उस ने अपने को न बचाके आप को मृत्यु के हवाले किया॥

यहूदा का प्रभु को पकड़वाना।

जब वह प्रधान याजकों के आगे लाया गया तो बहुधा लोग झूठी साक्षी देके उसे दोषी ठहराया चाहते थे परन्तु उन की साक्षी में बड़ी विरुद्धता पड़ी। अन्त में महायाजक ने उसे कहा हम से कह तू ईश्वर का पुत्र मसीह है कि नहीं और यिसू ने हां कहा॥

चौपाई।

कहूं उपर मुख कर यह बारा . सत्य बात हम से ततसारा।
मेंट सन्देह हमार यह माहीं . तू ईश्वर सुत है कि नाहीं॥
यिसू कही तुही सत बोला . उत्तर और कहूं कहि मोला।
तापर और कहूं सुनि बाणी . मन लगाय के सुनो सब प्राणी॥

ता पाछे तुम देखो सारे . मनुष्य पुत्र पराक्रम अधिकारे ।
घने स्वर्ग के मेघन माहीं . आवत देखोगे यह ठाईं ॥

तब वह बध के योग्य ठहराया गया और लोगों ने उस के मुंह पर थूका और उसे घूंसे मारे और कितनों ने थपेड़े मारके कहा हे मसीह हम से भविष्यद्वाणी बोल किस ने तुझे मारा ॥

जब भोर हुआ तब प्रधान याजक झूठी साक्षी दिलवाके यिसू को यहूदिया के अध्यापक के साम्हने लाया । अध्यापक ने उस की परीक्षा करके उस्से कहा मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता । परन्तु प्रधान याजकों ने अधिक दृढ़ता से लोगों को उभाड़ा और सब मिलके चिल्लाते रहे उसे क्रूस पर

चढ़ाइये क्रूस पर चढ़ाइये । अध्यापक ने जब देखा कि मेरे कहने से कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इस के विरुद्ध और भी हुल्लड़ होता है तब जल लेके लोगों के साम्हने अपने हाथ धोये और कहा कि इस धर्म्मी मनुष्य के लोहू से मैं निर्दोषी हूं ॥

जब यहूदा इसकरयूती ने देखा कि यिसू बध के योग्य ठहराया गया तब पछतावा करके वह प्रधान याजकों के पास गया और उन के साम्हने उन तीस रुपैयों को डाल दिया और जाके अपने को फांसी दिई ॥

यिसू का मारा जाना ।

अध्यापक ने यिसू को कोड़े मारके उसे योद्धाओं को सौंप

दिया। और उन्हों ने उस का बस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया और कांटों का मुकुट गूंथके उस के सिर पर रक्खा और उस के दहिने हाथ में नरकट दिया और उस के आगे घुटने टेकके उसे यों ठट्ठे में उड़ाया कि हे यहूदियों के राजा प्रणाम और उस पर थूका और उस नरकट को लेकर उस के सिर पर मारा ॥

जब उस्से ठट्ठा कर चुके तब बागा उतार और उसी के बस्त्र उसे पहिराके उसे क्रूस पर मारने को ले गये। पहिले तो यिसू को क्रूस ले चलना पड़ा परन्तु अन्त में वह किसी पथिक के कंधे पर ले चलने को रक्खा गया। जब प्यादे यिसू

का नगर के बाहर लाये तो उस का बस्त्र उतारा और उस के हाथ पांओं में कीलें गाड़के उसे क्रूस पर बांधा और क्रूस को भूमि में खड़ा किया। और दो डाकुओं को भी एक को उस की दहिनी और दूसरे को उस की बाईं ओर उस के सङ्ग क्रूसों पर चढ़ाया। जब यिसू क्रूस पर लटका था तब यह कहके कि हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं उस ने अपने हत्यारों के लिये प्रार्थना किई। जो लोग उधर से आते जाते थे उन्हों ने अपने सिर हिलाके उस की निन्दा किई और उन डाकुओं में से भी एक ने उस पर ठट्ठा मारा परन्तु दूसरे ने अपने सङ्गी को डांटके यिसू से बिन्ती किई

कि हे प्रभु जब आप अपने राज्य में आवें तब मेरी सुधि लीजिये। यिसू ने उस्से कहा मैं तुझ से सच कहता हूं कि आज ही तू मेरे सङ्ग स्वर्गलोक में होगा॥

यिसू की माता मरियम उस शिष्य के सङ्ग जिसे यिसू प्यार करता था क्रूस के पास खड़ी थी। और यिसू ने उसे कहा हे स्त्री देख यह तेरा पुत्र और शिष्य से कहा देख तेरी माता। और उस समय से उस शिष्य ने उसे अपने घर में ले लिया। नव बजे सुबह को यिसू क्रूस पर चढ़ाया गया और दो पहर के समय से तीसरे पहर लों सारे देश में अन्धकार छा गया। तीसरे पहर के निकट यिसू ने बड़े शब्द से पुकारके

कहा हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे त्यागा है। उस के पीछे यिसू ने कहा मैं प्यासा हूं। तब सिपाहियों में से एक ने तुरन्त दौड़के इसपंज लेके सिरके में भिगोया और नल पर रखके उसे पीने को दिया। तब यिसू बोला पूरा हुआ और बड़े शब्द से यह कहके कि हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं प्राण त्यागा। उस समय धरती डोली और पर्वत तड़क गये और क़बरें खुलीं तब शतपति और वे लोग जो उन के सङ्ग यिसू का पहरा देते थे भूईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके निपट डर गये और बोले कि सचमुच यह ईश्वर का पुत्र था ॥

चैापाई ।

ईश्वर सुत जेा जग उजियारा . मारि बेंत तेहि कियेा दुखारा ।
केामल उज्जल परम शरीरा . ताहि दरश दुख धरे न धीरा ॥
ताहि क्रूस काष्ठ बैठारा . हाथ पैर दे मेखन मारा ।
देखेा प्रभुता ईश्वरताई . धार्म्मिक पापी कर दुखदाई ॥

येाद्धाओं ने डाकुओं की टांगें तेाड़ीं परन्तु जब देखा कि यिसू मर चुका है तेा उस की टांगें न तेाड़ीं । तब उन में से एक ने बर्छी से उस का पांजर बेधा ॥

यिसू ने हमारे पापेां केा अपने देह में काठ पर उठा लिया । जिस ने हम से ऐसा प्रेम किया अवश्य है कि हम उस्से प्रेम रक्खें॥

यूसफ़ नाम एक धनवान ने अध्यापक से इच्छा पाई कि यिसू की लोथ को मट्टी देवें । निकोदेमुस जो पहिली रात को यिसू पास आया था पचास सेर के अटकल मिलाये हुए गन्धरस और मुसब्बर लेके आया और यूसफ़ और निकोदेमुस ने यिसू की लोथ को सुगन्ध के सङ्ग चद्दर में लपेटा और उसे एक नई क़बर में रक्खा जो पत्थर में खोदी गई थी और क़बर के द्वार पर पत्थर लुढ़काके चले गये ॥

प्रधान याजक अध्यापक के पास जाके बोले हे प्रभु हमें चेत है कि उस भ्रमाचार्य्य ने अपने जीते जी कहा कि तीन

दिन के पीछे मैं जी उठूंगा सो आज्ञा कीजिये कि तीसरे दिन लों क़बर की रखवाली किई जाय न हो कि उस के शिष्य रात को आके उसे चुरा ले जावें और लोगों में कहें कि वह मृतकों में से जी उठा है। सो अध्यापक ने आज्ञा दिई और उन्हों ने जाके पत्थर पर छाप किई और पहरुए बैठाके क़बर की रखवाली किई ॥

तीसरे दिन जब उषाकाल हुआ तब बड़ा भूईंडोल हुआ और परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरा और क़बर के द्वार पर से पत्थर लुढ़काके उस पर बैठा। उस का रूप बिजली सा और उस का वस्त्र पाले की नाईं उजला था।

और उस के डर के मारे पहरू काप गये और मृतकों के समान हुए ॥

बड़े भोर हुए कितनी स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्हों ने बनाया था लेके क़बर पास आईं। जब दूत को देखा तो निपट डर गईं और दूत ने उन से कहा मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यिसू को ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है। शीघ्र जाके उस के शिष्यों से कहो ॥

जब पथरस और यूहन्ना यिसू के दो शिष्यों ने सुना कि वह जीवता है तो क़बर के पास दौड़के आये और क़बर के भीतर गये और चट्टर पड़ी हुई देखी परन्तु यिसू की लोथ

वहां न थी तब अपने घर चले गये। एक स्त्री रोती हुई पीछे रह गई और यिसू ने कहा हे स्त्री तू क्यों रोती है। पहिले तो उस ने न जाना कि यह कौन है जो मुझ से बात करता है। तब यिसू ने कहा हे मरियम। वह पीछे फिरके उस्से बोली हे गुरु। यिसू ने उस्से कहा मेरे भाइयों के पास जाके उन से कह दे कि यिसू कहता है मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता हूं। सो मरियम ने शिष्यों को सन्देश दिया कि मैं ने प्रभु को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें किईं॥

उसी दिन के थोड़े काल में यिसू अपने दो शिष्यों को

जा यरूसलाम के निकट के गाव को ओर जाते थे दिखाई दिया। उस के पीछे जब शिष्य एक कोठरी में एकट्ठे हुए तब यिसू आया और बीच में खड़े होके उन से कहा तुम्हारा कल्याण होवे। तब शिष्यों ने यह निश्चय जाना कि वह मृतकों में से जी उठा है॥

जो हम यिसू के सच्चे भक्त हैं तो हम भी पिछले दिन मृतकों में से जी उठके अनन्त जीवन और सदा का आनन्द प्राप्त करेंगे॥

यिसू का स्वर्ग पर चढ़ जाना।

अपने जी उठने के पीछे यिसू चालीस दिन लों जगत में

रहा । उस समय के बीच में वह अपने शिष्यों को बेर बेर दिखाई दिया और उन्हें बहुतेरी बातें सिखलाईं । एक समय पांच सौ शिष्यों के अटकल को दिखाई दिया । जो बड़ी आज्ञा उस ने अपने शिष्यों को दिई वह यह थी कि तुम सारे जगत में जाके हर एक मनुष्य को सुसमाचार सुनाओ। जो विश्वास करे और बपतिस्मा लेवे सो त्राण पावेगा । परन्तु जो विश्वास न करे सो दण्ड के योग्य ठहराया जावेगा। और उस ने अपने शिष्यों से यह दयासंयुक्त बचन किया कि देखो मैं जगत के अन्त लों सब दिन तुम्हारे सङ्ग हूं ॥

चौपाई ।

प्रभु कृपाल तीजे दिन माहीं . जीव उठा कछु संशय नाहीं ।
शिष्यन को निज दरश दिखावा. दिन चालीस उन माहिं बितावा ॥
उन्हें कहा आज्ञा मम मानो . सकल जगत में करहु पयानो ।
मंगलसमाचार सब काहू . देहु सुनाहि लेहु यशलाहू ॥
सुनि मो पर बिश्वास जो लैहैं. सो अनन्त जीवन को पैहैं ।
जो बिश्वास न लैहैं भाई . सो अनन्त पीड़ा में जाई ॥

इस आज्ञा के अनुसार ईसाई उपदेशक सकल देशों में परमेश्वर का बचन सुनाके लोगों को त्राण प्राप्त करने का मार्ग बताते हैं अर्थात् उपदेश देते हैं कि यिसू मसीह पर विश्वास करो तो त्राण प्राप्त करोगे । यह सुसमाचार सकल

जगत में प्रचार किया जायगा और अन्त में समस्त लोग मान लेंगे कि केवल यिसू जगत्राता और मुक्तिदाता है॥

जब यिसू स्वर्गलोक पर चढ़ने को था तब अपने शिष्यों को यरूसलीम के निकट एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। और जब उन्हें असीस देता था तब उसी समय वह उन के देखते हुए ऊपर को चला गया और मेघ ने उसे उन की दृष्टि से छिपा लिया। वह स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर पिता की दहिनी ओर जा बैठा॥

ज्योंही शिष्य उस के जाते हुए स्वर्ग की ओर ताक रहे थे त्योंही दो पुरुष उजला बस्त्र पहिने हुए उन के निकट खड़े

हो गये और कहा कि तुम क्यों स्वर्ग की ओर खड़े हुए देखते हो। यही यिसू जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से आवेगा। यह सुनकर शिष्य सन्तुष्ट हुए और ईश्वर की स्तुति और गुणानुवाद करते हुए यरूसलीम को लौटे। इन बातों पर मन लगाके विचार करो कि जो विश्वास करे और बपतिस्मा लेवे सो त्राण पावेगा परन्तु जो विश्वास न करे वह दण्ड के योग्य ठहराया जायेगा॥

यिसू का फिर प्रगट होना।

प्रभु यिसू मसीह एक बेर अधीन होके मनुष्यों के बचाने

के लिये इस जगत में आया। वह पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्य से सब देशों के लोगों के न्याय करने के लिये फिर आवेगा। अचानक आकाश के मेघों में वह उज्वल दूतों की सेनाओं के सङ्ग प्रगट होगा और प्रधान दूत के शब्द सहित और ईश्वर की तुरही सहित वह स्वर्ग से उतरेगा। तुरही सुनके मृतक उठेंगे। क़बरें खुलेंगी। समुद्र भी उन मृतकों को जो उन में हैं उछाल देगा और जितने जो कभी जिये वह ईश्वर के बड़े श्वेत सिंहासन के साम्हने खड़े होंगे। धर्म्मी लोग न्यायी के दहिने हाथ और अधर्म्मी उस के बाएं हाथ होंगे। धर्म्मी यह कहते हुए कि हमारा ईश्वर यही है हम ने उस की बाट

जोही और वह हमें मुक्ति देगा आनन्दित होंगे। परन्तु अधर्म्मी पत्थरों और पर्बतों को पुकारके बिन्ती करेंगे कि हम पर गिरो और हमें सिंहासन पर बैठनेहारे के सन्मुख से बचाओ। पुस्तकें खोली जायेंगी और मृतकों का विचार पुस्तकों में लिखी हुई बातों के समान उन के कर्म्मों के अनुसार किया जायगा। यिसू धर्म्मियों से अर्थात् अपने विश्वासियों से कहेगा हे मेरे पिता के धन्य लोगो आओ जो राज जगत की उत्पत्ति से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है उस के अधिकारी हो। परन्तु अधर्म्मियों से कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे पास से उस अनन्त आग में जाओ जो शैतान और उस के दूतों के लिये तैयार किई गई है॥

स्वर्गबासियों के आनन्द का वर्णन कौन कर सक्ता है। वे फिर भूखे न होंगे और न फिर प्यासे होंगे और न उन पर धूप न तपन पड़ेगी और ईश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा। कौन अधर्म्मियों की भयानक दशा का वर्णन कर सक्ता है। आग की झील में डाला जाना जहां रोना और दांत पीसना होगा और जहां उन का कीड़ा नहीं मरता और आग कभी नहीं बुझती यह कैसी भयमान दशा होगी। तुम न्यायी को सिंहासन पर बैठे हुए देखोगे। अवश्य है कि तुम अपनी सब करनी का लेखा देओ। अपने ईश्वर से भेंट करने को सिद्ध हो॥

परमेश्वर के पुत्र यिसू ने किस कारण अवतार लेके ऐसा दुःख और क्लेश सहा । इस प्रश्न का उत्तर यह है ॥

ईश्वर ने मनुष्य को पवित्र दशा में उत्पन्न किया था । अवश्य था कि मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा को माने । जो न माने तो मृत्यु के दण्ड का भागी होगा । प्रथम मनुष्य ने दुष्टात्मा शैतान से बहकाया जाके ईश्वर की आज्ञाओं को टाल दिया तो उस के सन्तान उस के पापी स्वभाव के अधिकारी हैं और मनसा बाचा कर्म्मणा में पाप करते चले आये हैं ॥

इस हेतु से कि मनुष्यों ने ईश्वर की पवित्र आज्ञाओं को

टाल दिया तो अवश्य है कि अथवा वह दण्ड पावे वा उस की सन्ती में कोई दूसरा दण्ड उठा लेवे। त्राण प्राप्त करने के लिये पश्चात्ताप करना बस नहीं है। न्यायी जब देखता है कि दोषी पश्चात्ताप करता है तब उस कारण से उसे क्षमा नहीं करता और यदि कोई दूसरा कारण न हो तो दोषी निश्चय दण्ड पावेगा। ईश्वर के पुत्र यिसू ने बड़ी दया और प्रेम से हमारे अपराधों को अपने ऊपर लिया और इस कारण कि पापियों को बचावे इस जगत में अवतार लेके प्रगट हुआ और दुःख और क्लेश उठाके मारा गया। इस लिये कि वह यह कर्म्म कर चुका तो यह सुसमाचार सकल लोगों को

सुनाया जाता है कि पापों की क्षमा उसी के द्वारा से है। जो हम उस पर विश्वास करके उसे अपना त्राणकर्त्ता जानते हैं तो हमारे पाप का बोझ उस पर लादा जाता है और वह हमारे स्थान में खड़ा होके हमारे लिये लेखा देता है और हम उस के धर्म्म के हेतु से जो हमारी ओर गिना जाता है निर्दोषी ठहरते हैं॥

परन्तु अवश्य है कि हमें पूरा धर्म्म भी प्राप्त होवे। हमारे सब से उत्तम कर्म्म दुर्गन्ध धज्जी के समान हैं और उन्हें पहिनके हम कभी परमेश्वर के सन्मुख खड़े नहीं हो सक्ते। यिसू मसीह ने अपने लोगों के लिये ईश्वर की सारी व्यवस्था को

पूरा किया और उस का धर्म्म उजले बस्त्र के समान है जिसे पहिरके हम ईश्वर के साम्हने खड़े हो सक्ते हैं। चेत करना अवश्य है कि शिष्य स्वर्गबासी गुरु के धर्म्म के कारण बचाया जाता है और जितने मनुष्य किसी सांसारिक गुरु पर आस रखते हैं उन की आस टूटेगी और वे निरास हो नरक के अधिकारी ठहरेंगे। एक और कारण कि यिसू ने जगत में आ दुःख और क्लेश उठाया यह है कि हमारे सारे दुःखों और परीक्षाओं में भागी होके हमारी सहायता करे॥

यिसू ने परमेश्वर के दहिने हाथ बैठ करके कर्त्ता और त्राता का श्रेष्ठ पद पाया जिसतें पश्चात्ताप करवाके पापमोक्षण

देवे । वह राजा होके अपने लोगों पर राज्य करता और उन का रक्षक होता है ॥

जो लोग यिसू के द्वारा ईश्वर के पास आते हैं वह उन का त्राण अत्यन्त लों कर सक्ता है । हे प्रियो वह तुम्हें बचाने के योग्य है ॥

त्राण के प्राप्त के हेतु क्या करना अवश्य है ।

इस्से कोई भारी प्रश्न नहीं है कि त्राण के प्राप्त के हेतु क्या करना अवश्य है । यिसू मसीह ने कहा यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उस को क्या प्राप्त होगा । यदि कोई मनुष्य यह प्रश्न करे कि मुझे त्राण पाने

को क्या करना अवश्य है। तो इस का उत्तर यह है कि प्रभु यिसू मसीह पर विश्वास करो तो त्राण पाओगे ॥

त्राण पाने को अवश्य है कि तुम अपने को पापी जानके मान लो कि मैं ने ईश्वर की आज्ञाओं को टाल दिया है। तुम आप अपने पापों का प्रायश्चित्त नहीं दे सक्ते। गङ्गा नर्बदा इत्यादि में नहाने ब्राह्मण को दान दक्षिणा देने तिलक लगाने तपस्या और पूजा करने से पाप नहीं छूटता ॥

चौपाई।

जप तप तीरथ योग समाधी . कलिमल विकल न कुछ निरुपाधी।
करत सुकृतनहिं पाप सिराहीं . किन्तु छिणे छिण बाढ़त जाहीं ॥

दोहा ।

योग यज्ञ व्रत दान है तीरथ मूरत राम. पिण्डा तर्पण होम यज्ञ ये सब धोखे काम ।

कवित ।

हृदय में मया न दया तब काह भया दश बेर नहाये ।
चन्दन सो चरची पुतली गति होत नहीं नित माल फिराये ॥
देव देवा सब पूजि फिरे तब छूत छुटी नहिं छाप लगाये ।
तुलसी प्रभु परतीत बिना फिर काह भया शङ्ख अरु घंट बजाये ॥

मूरतों की पूजा करने और देवी देवताओं पर आशा रखने को त्याग तुम्हें केवल सत्य परमेश्वर की आराधना करना

अवश्य है। और सब कुछ छोड़के यिसू का शरणागत होना और उसे त्राणकर्त्ता जानके ग्रहण करना अवश्य है। वह अब स्वर्गलोक में है परन्तु ईश्वर होके वह सर्वत्र है और तुम्हारी हर बात को सुनता है। प्रतिदिन यह प्रार्थना करो कि हे ईश्वर दयालु यिसू मसीह के कारण मुझ पापी पर दया कर। जो तुम मन लगाके यह प्रार्थना करोगे तो ईश्वर तुम पर दया करके तुम्हारे पापों को क्षमा करेगा और तुम्हें अनन्त जीवन का अधिकारी बनावेगा॥

अवश्य है कि तुम न केवल यिसू पर आशा धरो परन्तु उस के समान भी बनो। वह सकल पाप से घिन रखता

और पवित्रताई को प्रसन्न करता है। और अवश्य है कि तुम भी वैसाही करो। यिसू ने निकोदेमुस से कहा कोई यदि फिरके न जन्मे तो ईश्वर का राज्य नहीं देख सक्ता। अवश्य है कि तुम फिरके यह नया जन्म पाओ। जो तुम्हारे मन में यह नवीनता कर सक्ता है वह पवित्रात्मा है। प्रतिदिन यह प्रार्थना करो कि हे ईश्वर कृपालु यिसू मसीह के कारण पवित्रात्मा का दान मुझे दे कि वह मेरे मन को शुद्ध करके मुझे तेरे समान बनावे। सीधे मार्ग में चलने के लिये यिसू की सहायता मांगा करो। जैसा छोटा बच्चा जब पथरीले मार्ग पर चलता है जब लों पिता उसे न थांम ले गिर पड़ता

है वैसाही जब लों यिसू मसीह हमारी सहायता न करे तब लों धर्म्म के मार्ग में चल नहीं सक्ते ॥

अवश्य है कि तुम मनुष्यों के आगे अपने को यिसू का भक्त प्रगट करके उस के नाम से बपतिस्मा पाओ। यिसू कहता है कि जो कोई मनुष्यों के आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गबासी पिता के आगे मानूंगा। परन्तु जो कोई मनुष्यों के आगे मुझ से मुकरे उस्से मैं भी अपने स्वर्गबासी पिता के आगे मुकरूंगा। मनुष्यों की आज्ञा से अधिक ईश्वर की आज्ञा को मानो। यदि तुम्हारे घर के लोग और मित्र तुम्हें कहें कि यिसू के पीछे मत चलो परन्तु इस के विरुद्ध

जिस मार्ग में तुम्हारे पुरखे चलते थे उसी मार्ग में तुम भी चलते रहो तो उन्हें मत मानो। त्राण को अभी प्राप्त करो क्योंकि क्या जानें मृत्यु कब होगी ॥

दोहा।

दौलत दुनिया जपत यह सबै वृथा पहिचान।
एक नाम प्रभु यिसू को सबते उत्तम मान ॥

यिसू तुम्हें आने का नेवता देता है। उस की दयावन्त बातों को सुनो। वह कहता है कि हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझ से दबे हो मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा ॥

प्रतिदिन ईश्वर का धन्यवाद करके और अपने पापों से क्षमा मांगके ईश्वर से प्रार्थना करो। हम उदाहरण की रीति से यहां एक प्रार्थना लिखते हैं ॥

हे सृष्टिकर्त्ता हे सृष्टिपालक मेरे स्वर्गबासी पिता दीनता से तेरे शरणागत होके मैं तेरी आराधना करता हूं। तू कृपा-निधान और दयासागर है। मेरे उत्पन्न होने से अब लों तू ने मुझे अनगणित आशीस दिये हैं। परन्तु मैं तेरा कृतघ्न हुआ हूं। तेरी पवित्र आज्ञाओं से घिण करके मैं ने तेरी इच्छा के विरुद्ध किया और अनगणित पाप करते चला आया

हूं। तेरी दया के अयोग्य होके मैं तेरी ओर से क्रोध और अनन्त दण्ड के योग्य हूं। परन्तु तू ने बड़ी कृपा और दया से पापियों के लिये प्रायश्चित्त करने को अपने प्रिय पुत्र यिसू मसीह को जगत में भेजा। अपने प्रिय पुत्र के मुख पर दृष्टि करके उस के कारण मेरे पापों और अपराधों को क्षमा कर और उस के हेतु मुझे नरक से बचा॥

मैं यिसू का पीछा करके शुद्धता में अपना जीवन बिताने चाहता हूं। परन्तु मेरा स्वभाव पापी है और मैं पवित्रताई करने के योग्य नहीं हूं। केवल पवित्रात्मा मेरे मन और मेरे चरित्र को शुद्ध कर सक्ता है। यिसू मसीह के हेतु से पवित्रात्मा का

दान मुझे दे कि वह मेरे मन में बास करके पाप की तृष्णा को मिटा दे और मुझ में पवित्र स्वभाव उत्पन्न करे और मुझे धर्म्म के मार्गों में चलावे। न केवल मुझ को परन्तु सभों को भी जो मुझ से संबन्ध रखते हैं ऐसे आशीस दे और दया करके सकल देशों के लोगों को यिसू मुक्तिदाता का ज्ञान पहुंचा और उन्हें उस की ओर फिरा। मैं अपने और अपना सब कुछ तुझे सौंपता हूं। हे ईश्वर पिता मुझे अपना प्यारा जानकर ग्रहण कर। हे ईश्वर पुत्र जगत्राता और मुक्तिदाता मेरे पापों को क्षमा कर। हे ईश्वर पवित्रात्मा मेरे मन में बास करके मुझे पवित्र कर। हे स्वर्गीय पिता दया करके

अपने प्रिय पुत्र यिसू मसीह के कारण मेरी यह प्रार्थना और बिन्ती ग्रहण कर ले। आमीन॥

बिनय।

सब से बिनय करों कर जोरी . मानो सत्य बचन यह मोरी।
बन्धु प्रतीत मसीह पर लाओ. जेहितें मुक्तिपदारथ पाओ॥
सकल नरक पीड़ा से बचिहो. सदा स्वर्ग में हर्षित बसिहो।
और नहीं कुछ यतन उपाई . सत्य कहों मैं भुजा उठाई॥

गीत।

कृपा सागर जग उजागर . पाप के भार से कर निस्तार।
तू है तारक और उपकारक. मुझे तार हे तारणहार॥

मैं हे वाणी हूं अज्ञानी . नेत्र हीन और मन मलीन ।
धर्म्म रहित और पाप सहित. आशा हीन और दुष्ट अधीन ॥

तू हे मित्र है पवित्र . मैं अशुद्ध और नीति विरुद्ध ।
तू दयालु और कृपालु . दे निर्बुद्ध को आत्मिक बुद्ध ॥

जगतत्राता मुक्तिदाता . कृपामय और मृत्युञ्जय ।
यिसू स्वामी अन्तरजामी . तेरी जय हे पाप की क्षय ॥

इति ।

इलाहाबाद मिशन प्रेस के जन्त्रालय में छापी गई ।

१८७५ ई० ।

The Library of Princeton Theological Seminary